साम्प्रदायिक दंगे
और
उनकी रोक-थाम

नईम सिद्दीक़ी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"शुरू अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से"

साम्प्रदायिक दंगे
और
उनकी रोक-थाम

(**नोटः—** यह लेख बंटवारे से कुछ पहले का है और सन् १९४७ ई० में विभिन्न स्थानों से हिन्दी उर्दू में प्रकाशित हो चुका है। इसकी उपयोगिता को देखते हुये इसे अब पुनः प्रकाशित किया जा रहा है)

दंगों के कारण पर एक न्यायोचित दृष्टि

दंगे का अपराधी कौन है? दंगे की जो अग्नि हिन्दुस्तान में भड़क रही है उसका आरोप न केवल हिन्दुओं पर है, न केवल मुसलमानों पर, अपितु दोनों पर समान है और दोनों में से कोई भी समूह ऐसा नहीं है जो सच्चे दिल से हर प्रकार के झगड़े फ़साद से घृणा करता हो, वरन दोनों समूहों के जनसाधारण दुखी केवल उस अवसर पर होते हैं जब कि चोट स्वयं उनके ऊपर पड़े और उन अवसरों पर खुल्लम खुल्ला प्रसन्न होते हैं, जब चपत दूसरों के गाल पर पड़े।—और दोनों सम्प्रदायों के बड़े और ऊंचें लोग भी चाहे मुख से कुछ भी कहते हों, प्रायः अपने हृदय की गहराइयों में केवल अपनी जाति के चोट खाने पर दुखी होते हैं और दूसरी जाति के जन, धन तथा आदर सम्मान पर जब उनकी अपनी जाति डाके डालती है तो उनकी आत्मा अतिप्रसन्न होती है। —केवल यही मूल कारण है कि

दंगे की अग्नि भड़कती है और केवल यही कारण है कि अपराध में दोनों एक समान भागी हैं।

यह क्लेश पूर्ण तथा दुखदाई उपद्रव इतने दुखद नहीं हैं जितनी दुखद वह आत्मा है जो इनके पीछे काम कर रही है। यह दंगे अति अपवित्र हैं किन्तु इससे सहस्रों गुना अपवित्र वे भावनायें हैं जो इन को पालती हैं। यह ख़ूनी खेल अत्यन्त घृणास्पद है, किन्तु इससे लाखों गुना अधिक घृणास्पद वे सिद्धान्त हैं जिनके बल पर यह खेल खेला जा रहा है।

अतएव सामयिक उपायों से संतुष्ट हो जाना बड़ी भूल है। बाहर के फोड़ों की मरहम पट्टी करके भीतर की पीप की उपेक्षा कर देना अंधाधुंध पागलपन है। हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रत्यक्ष झगड़ों को विनती निवेदन या शक्ति एवं सत्ता से कुछ स्थगित कर देना और झगड़ों के मौलिक कारणों को ज्यों का त्यों छोड़ देना एक निरर्थक बात है।

सोचने की बात तो यह है कि दंगों के मूल कारण क्या हैं? और इन को दूर क्यों कर किया जा सकता है? —और दंगों के मूल कारण को बाकी रखने और कुछ देर के लिए धरातल के नीचे दबा देने के परिणाम आगे चल कर क्या कुछ प्रगट हो सकते हैं तथा यह कि हमने जो सिद्धान्त अपने सामाजिक जीवन के निर्माण हेतु अपनाये हैं वे कैसा समाज बनायेंगे। इस सोच से कराहते रहने और अपने आप को धोखा देते रहने का परिणाम इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है कि हमारा अपना हिन्दुस्तान जंगली जानवरों का एक अखाड़ा बने और इसमें विभिन्न जत्थे आपस में लड़ते मरते रहें और बाहय संसार को भी अपने दुष्कर्मों से भ्रष्ट करते रहें। आखिर जिन मार्गों पर चलने से पहले ही चरण में हमें यह दिन देखने पड़ रहे हैं उन पर आगे चलने से हमें क्या सुख मिलेगा?

इस सम्बन्ध में हम अपने दृष्टिकोण से जिन चीज़ों को दंगों का मूल कारण समझते हैं उनका संक्षेप में यहां उल्लेख किया जाता है ताकि प्रत्येक समझदार हिन्दू और मुसलमान इन पर विचार करके अपने व्यवहार तथा अपनी मनोवृति को सुधारना शुरू कर दे और एक ऐसे भविष्य की नींव डालने की कोशिश करे जिसमें शांति एवं कल्याण हो।

साम्प्रदायिकता अथवा जातिवाद – सब से बड़ा दानव जो हमारे देश में आधुनिक युग ने लाकर छोड़ दिया है वह साम्प्रदायिकता अथवा जातिवाद का दानव है। जातिवाद जिस प्रकार का वर्गीकरण करती है उसकी नींव किसी ऐसे नैतिक सिद्धान्त पर नहीं होती जो विभिन्न मनुष्यों को एक दूसरे से जोड़ने वाले हों अपितु यह सर्वथा भौतिक आधरों पर एक देश या वर्ण, या बोली या संस्कृति के जोड़ से एक टोली बनाती है और उसे दूसरी टोलियों से अलग करके पृथकतावाद के आवेग से उसका पोषण करती है। जातियता के मूल स्वभाव ही में यह अंश सम्मिलित है कि वह अपनों की भलाई चाहे और परायों की बुराई। अतएव सर्वथा स्वभावतः इसका दूसरी सत्ताओं से झगड़ा रहता है खींचातानी रहती है, लड़ाई-भिड़ाई होती है, और एक जाति के लाभ में दूसरी जाति की हानि, और एक के हर्ष में दूसरे का क्षोभ अवश्य सम्मिलित होता है। कोई जाति यदि किसी अन्य जाति से लड़े-भिड़े बिना जी रही हो तो इस कारण यह न होगा कि जाति की प्रकृति लड़ाई-झगड़े को नापसन्द करती है अपितु अनिवार्यतः इस कारण होगा कि वह लड़ाई-झगड़े का सामर्थ्य अपने में न पाती होगी या उस पर अन्य जाति का भय सवार होगा या किसी तीसरी शक्ति से उसे आशंकायें होंगी और इस हाल में वह निरंतर इस तैयारी में रहेगी कि इसके पास दूसरों से लड़ने की शक्ति एकत्र हो जाये। जहाँ यह शक्ति

एकत्र हुई फिर कोई बंद उसे रोक नहीं सकता और कोई अगाड़ी-पिछाड़ी उसे शरारत से बाज़ नहीं रख सकती। फिर निर्बल के लिए कोई शरण नहीं।

जातिवाद का परम सिद्धान्त यह है कि ''मेरी जाति'' सत्य पर हो अथवा असत्य पर, मुझे उसका साथ देना चाहिए। अतएव यही बात हमें हिन्दुस्तान में भी दिखाई दे रही है। हिन्दू प्रत्येक दुष्कर्म में हिन्दू के साथ है और किसी अच्छाई में भी मुसलमान का साथ नहीं दे सकता। इसी प्रकार मुसलमान, मुसलमान की हर बुराई पर वाह-वाह करता है और हिन्दुओं की किसी अच्छाई को अच्छाई मानने का साहस उसमें नहीं रहता। मुसलमान हिन्दू पर अत्याचार करता है तो सारी मुसलमान जाति झूम जाती है और हिन्दू मुसलमान पर अत्याचार करता है तो समस्त हिन्दू जाति इस पर प्रसन्न होती है। हिन्दू पीड़ित हिन्दू के दुख में तो शरीक होता है किन्तु अत्याचारी हिन्दू का हाथ नहीं पकड़ता। इसी प्रकार मुसलमान पीड़ित मुसलमान के आंसू तो पोंछता है किन्तु अत्याचारी मुसलमान के अत्याचार पर उसे कोई दुख नहीं होता।

मुसलमान दफ़्तर और असेम्बली से लेकर बाज़ार और मण्डी, कारख़ाने और खेत तक में मुसलमान का साथी है। उसकी नेकी का भी साथी है उसकी बदी का भी, न्याय का भी अन्याय का भी, सत्य का भी और असत्य का भी– दूसरी ओर हिन्दू भी दुकान और सड़क से लेकर आदलत और केबीनेट तक में हिन्दू का साथी है, बुराई करे तो भी भलाई करे तो भी, सीधी राह पर चले तो भी, कुमार्ग पर चले तो भी–हिन्दू जब उस जाति का एक व्यक्ति है तो वह उसी का साथी है, मुसलमान का वह साथ नहीं दे सकता!

हिन्दू उस हिन्दू आँख को चूमता है जो मुसलमान की ओर घृणा से उठे और मुसलमान उस मुसलमान के हाथ को चूमता है जो

हिन्दू पर अत्याचार के लिए उठे! सारी हिन्दू जाति अपनी सम्पत्ति का बड़े से बड़ा भाग उस दंगे पर व्यय करने के लिए तैयार है, जिससे मुसलमानों को क्षति पहुंचती हो और सारी मुसलमान जाति उस फ़साद में जानें देने को तैयार है जो हिन्दुओं को नष्ट कर दे।

यह है वह मनोवृत्ति जो साम्प्रदायिकता के दानव ने हमारे जनसाधारण को प्रदान की है और यह केवल जन-साधारण ही में नहीं प्रमुख व्यक्तियों में जन साधारण से बढ़ चढ़ कर पाई जाती है, अपितु जनसाधारण में इसे फैलाने की ज़िम्मेदारी तो स्वयं प्रमुख व्यक्तियों ही के सिर है। निस्संदेह हमारे नेता और पत्र-सम्पादक ही जनसाधारण के दुराचारों में सब से ज़्यादा शरीक हैं।

हर एक नेता रात दिन इस सोच विचार में रहता है कि किस तरह वह अपनी जाति को दूसरी जाति पर प्रभुत्वशाली बनाये, कैसे अपनी जाति के आवेगों को भड़काये रखे और कैसे दूसरी जाति की उचित भावनाओं को भी कुचल डाले, अपनी जाति को कैसे अधिक अधिकार दिलवाये और दूसरी जाति के अधिक से अधिक अधिकार और सम्पत्ति को छीन लाये। दोनों मोर्चों के सेनापति यही सोचते हैं, यही करते हैं। हिन्दू लीडर हिन्दू को उकसाता है, मुसलमान लीडर मुसलमान को उकसाता है, हिन्दू लीडर अपनी जाति के पीठ ठोंकता है, मुसलमान लीडर अपनी जाति का संरक्षण करता है—इधर के लीडर को उधर की मुसीबत का एहसास नहीं और उधर के लीडर को इधर के दुःखों का ध्यान नहीं।

जिस लीडर ने अपनी जाति को नीति, न्याय और सत्य की शिक्षा न दी हो और जिस ने अपनी जाति की त्रुटियों को अपनी आंखों के सम्मुख फूलने फलने दिया हो और जो अपनी जाति के दुराचारियों के दुराचार से पूरी पूरी घृणा न करे और ऐसे लोगों का सिर न कुचल सके तो वह इनके दुष्कर्मों का उस समय तक पूर्णतया

उत्तरादायी है जब तक वह उनको अपने साथ लेकर चलने से इंकार न कर दे । नवाखली, उत्तरी एवं पश्चिमी पंजाब और सीमाप्रान्त में जो कुछ हुआ है उस पर मुसलिम लीडर क़ितनी ही अप्रसन्नता प्रगट करें वह इसके पूरे पूरे ज़िम्मेदार हैं जब तक कि इन प्रान्तों के मुसलमानों का वे प्रतिनिधित्व करते और उनके नेता बने रहते हैं उनको अपनी जाति का हिस्सा समझते हैं। इसी प्रकार बिहार, कलकत्ता और गढ़मुक्तेश्वर में जो कुछ हुआ है उस पर हिन्दू लीडर कितने ही निर्दोष वक्तव्य क्यों न दें, वे जब तक इन प्रदेशों के हिन्दूओं के प्रतिनिधि और लीडर हैं और जब तक उनको अपनी जाति का एक हिस्सा समझते हैं वे इनके प्रत्येक करतूत के उत्तरदायी हैं।

जिस व्यक्ति को अपनी जाति की दशा और उसकी कार्यवाहियों का पता न हो, जिसके पास अपने अधीन प्रदेशों में फैलने वाले आवेगों का समाचार तत्क्षण ही नहीं पहुंच सकता और वह फ़साद को तुरन्त रोकने का उपाय नहीं करता उसे कोई अधिकार नहीं कि वह लोगों का नेतृत्व करे।—और वह नेतृत्व स्वीकार करता है तो वह अपने समुदाय के प्रत्येक कार्य का उत्तरदायी है।

ये आज के दंगे कुछ एक दम तो फूटे नहीं हैं अपितु मुद्दतों के पोषित आवेगों का ये एक सामयिक प्रदर्शन हैं—तो प्रश्न यह है कि ये आवेग किसने पाले हैं? ये लीडर ही तो थे जिन्होंने जल्सों जलूसों भाषणों और नारों द्वारा अपनी जाति के दुराचारियों की मनोवृत्ति को तीव्र किया है। कोई नहीं कह सकता कि किसने एकान्त में क्या-क्या सोचा और कहा है। कोई प्रमाण नहीं दे सकता कि किन अवसरों पर लीडरों ने क्या-क्या मन्त्र जाति के कानों में फूँके हैं, किन्तु आज के दंगे बोल-बोल कर कह रहे हैं कि दोनों जातियों के लीडरों ने

अपने-अपने पीछे चलने वालों के आचरण में सेवा का नहीं घृणा का आवेग पाला, खुल्लम खुल्ला पाला हो या छिपे तौर से, खुले शब्दों में पाला हो या दबे शब्दों में—और स्वयं यह लीडर यदि पक्षपात से मुक्त हो कर अपने कामों पर दृष्टि डालें तो सरलता पूर्वक उन्हें अपने दोषों का अनुमान हो सकता है।

विचार कीजिए तो ज्ञात होगा कि इन लोगों ने अपनी-अपनी जातियों का स्वभाव यहाँ तक बिगाड़ दिया है कि वे कदाचित किसी सत्यवादी तथा न्याय-प्रिय नेता को स्वीकार भी न कर सकेंगी! अब तो पसन्द उस व्यक्ति को किया जाता है जो स्टेज से दूसरी जाति के प्रति अधिक से अधिक क्रोध दिखा सके, अधिक से अधिक गाली दे सके, अधिक से अधिक आक्षेप लगा सके, दूसरी जाति के लीडरों की ख़ूब बुराई बयान कर सके, दूसरी जाति की माँगों को हर सीधे उल्टे ढंग से अनुचित कह सके, और इसी प्रकार यह बात भी चाही जाती है कि अपनी जाति के दुराचारों को लीडर न केवल छिपाने और उन पर पर्दा डालने वाला हो अपितु उन्हें प्रभावशाली वक्तव्य तथा व्याख्यान से सदाचार बना के दिखाये और उन पर गर्व प्रकट करे! —अतः लीडर यह सब कुछ करते हैं और दोनों जातियों को एक दूसरे से लड़ने पर तैयार करते जा रहे हैं।

फिर मुख्य लोगों में से दूसरा समूह पत्रकारों का है और सच तो यह है कि लीडरों से बढ़कर उन आपदाओं का ज़िम्मेदार यह वर्ग है जो जातिवाद की "दया" से प्रकट हो रहा है। पत्र-सम्पादन का सिद्धान्त जातिभक्ति के वातावरण में यह हो ही नहीं सकता कि नेकी न्याय और सत्य फैलाना है और बुराई, झूठ और अत्याचार को रोकना है। यहां प्रत्येक हिन्दू अखबार का सिद्धान्त यह है कि हिन्दू का साथ देना है और प्रत्येक मुसलमान पत्र-सम्पादक का धर्म यह है कि मुसलमान की पीठ ठोकनी है। प्रत्येक पत्र की दृष्टि में आदर

सम्मान उस सत्य के लिए नहीं है जिससे उनकी जाति को हानि पहुँचती हो अपितु उस झूठ के लिए है जिससे उसकी जाति को लाभ पहुँचता हो। प्रत्येक पत्र के समीप न्याय उसका नाम है कि दुख दूसरों के भाग में डालकर सुख अपनों के हिस्से में डाला जाये। प्रत्येक पत्र के मत में शुभ-कृत्य की परिभाषा यह है कि अपने जत्थे की बुराई खूब फैले और दूसरे की भलाई का रास्ता रोका जाये—यह है हमारे यहाँ पत्र-सम्पादन का दीन और धर्म।

कोई पत्र उठा लीजिए। किसी भी घटना के बारे में वह अनिवार्यतः थोड़ा बहुत ऐसा झूठ अवश्य बोलेगा, जिससे उसकी अपनी जाति के किसी अवगुण पर परदा पड़ सके या दूसरे पर आरोप लगाया जा सके। वह प्रत्येक दंगे के वर्णन में अपनी जाति की क्षति बढ़ा चढ़ाकर दिखायेगा और दूसरों की क्षति घटाकर दिखायेगा। वह अपने घर के पत्येक दुराचारी का पक्ष पाती बनेगा और दूसरों के घर के प्रत्येक सज्जन पुरुष को गुंडा ठहरायेगा। दोनों कैम्पों के पत्र कुछ के कुछ समाचार एकत्र करेंगे, दोनों अपनी-अपनी टोली को बुराई पर उत्सुक करेंगे, दोनों अपने विरोधी दल के लिए गंदी से गंदी भाषा प्रयोग करेंगे, दोनों जाति के लीडरों का अपमान करेंगे और दोनों एक दूसरे से बढ़-बढ़ कर घृणा के बीज दिलों में बोयेंगे।

आप अखिल हिन्दुस्तान में ज़रा ग़ौर से देखिए कि कितने अख़बार आपको ऐसे मिलते हैं जो हिन्दू मुसलमान के प्रश्न के बिना केवल सत्य न्याय एवं सदाचार के साथ हों और झूठ, पाप एवं अत्याचार के शत्रु हों। उनकी दृष्टि में मुसलमान का झूठ और हिन्दू का झूठ एक समान घृणा-स्पद हो। उनकी दृष्टि में मुसलमान का अत्याचार और हिन्दू का अत्याचार एक ही जैसा घृणित हो, उनकी दृष्टि में हिन्दू का दुष्कर्म और मुसलमान की बदी एक ही समान

अवगुण हो, वह दोनों के चाल-चलन को एक ही समान न्याय से परखें, दोनों को एक ही कसौटी पर जाँचें, दोनों को एक ही माप दण्ड से नापें और दोनों को एक ही तराज़ू से तौलें। दोनों की अच्छाइयों पर एक समान प्रसन्न हों और दोनों के अवगुणों पर एक समान घृणा प्रकट करें, दोनों के दुख पर समान रूप से दुखी हों, और दोनों के सुख पर एक ही तरह संतुष्ट हों, हिन्दू पत्रिका हिन्दू की बुराई के विरुद्ध क़लम से युद्ध करे और मुसलमान अख़बार मुसलमान की बुराई के ख़िलाफ शब्दों के हथियार इस्तेमाल करे।

जब यह बात नहीं है तो फिर किसी पत्र सम्पादक को नवाखली और बिहार कलकत्ता और बम्बई के दंगों से बरी नहीं किया जा सकता। हमारे यह क़लमी लीडर चाहे देखने में आपको सज्जन बने हुए दफ़्तरों में बैठे दिखाई दें किन्तु वास्तव में दंगा-ग्रस्त प्रान्तों में लोगों के जन-धन और इज़्ज़त आबरू के नष्ट करने वाले यही लोग हैं। प्रत्येक छुरा इन्हीं ने चलाया, हर आग इन्हीं ने लगाई, प्रत्येक घर इन्हीं ने गिराया, हर एक आबरू और इज़्ज़त पर इन्हीं ने हमला किया! इन्हीं के क़लम थे जो रणस्थली में जाकर छुरे बन गये, इन्हीं के शब्द थे जो दंगा करने के लिए गुंडों के रूप में प्रकट हुये, इन्हीं की दवातों की रोशनाइयों ने रक्त का रूप धारण कर लिया।

आख़िर जिन हिन्दू पत्र-सम्पादकों ने नवाखली की घटनायें आग के शब्दों में लिखी थी, उनके आग भरे लेख बिहार और गढ़मुक्तेश्वर के दंगों पर किस हिमपात से ठंडे पड़ गये। और जिन मुसलमान अख़बारों ने बिहार की घटनाओं पर आँखों से ख़ून के आँसू बहाये हैं उनकी आँखें नवाखली, सीमाप्रान्त, और उत्तरी पंजाब की घटनाओं पर क्यो सूख गईं? तुम यदि अपनों के पापों पर उनकी पीठ ठोंकते हो तो अब दूसरों के पापों पर क्यों शाबाश नहीं

कहते। यदि अपनी जाति की पीड़ा पर रोते हो तो दूसरी जाति की विपत्ति पर क्यों नहीं रोते। अपनी जाति के लिए प्रोपेगंडा करने में तुम्हारे क़लम यदि तेज़ चलते हैं तो दूसरों का प्रोपेगंडा करने में यह क्यों सुस्त पड़ गये? यदि दूसरों के गुंडों के लिए तुम गालियाँ गढ़ सकते हो तो अपने गुंडों के लिए तुम्हारे मुंह से फूल क्यों झड़ते हैं? यदि दूसरों के पापों पर धिक्कार कर सकते हो तो अपनों के पापों को क्यों बुरा नहीं समझते।

वास्तव में पत्र-सम्पादकों की बिरादरी को दंगों से वैर नहीं है अपितु केवल उस दंगे से वैर है जो उनकी जाति के लिए हानिकर हो, उन्हें झूठ से घृणा नहीं, झूठ के उस प्रकार से घृणा है जिसमें दूसरों का लाभ हो। उन्हें अत्याचार से कोई शिकायत नहीं, केवल अत्याचार के उस रूप से शिकायत है जिसमें अपने सम्प्रदाय का घाटा हो। ये लोग अपने-अपने घरों में फ़साद के मेंढ़े खूब पालते हैं, झूठ के भेड़ियों को खिलाते हैं, अत्याचार के अजगरों को स्वयं जवान करते हैं और जब तक पारी में, अपनी जीत होती है, खुशी मनाते हैं और जब जीत दूसरे की होती है तो विलाप करते हैं।

इन अत्याचारियों ने ही जनसाधारण की रुचि इतनी बिगाड़ दी है कि यदि कोई अख़बार साम्प्रदायिकता अथवा जातिवाद से मुक्त होकर केवल सत्य का साथ देने के लिए उठ खड़ा हो, तो उसे कोई ख़रीदार नहीं मिलेगा। आज बिक्री उस अख़बार की है, मुसलमानों में भी हिन्दूओं में भी, जिसमें दूसरे सम्प्रदाय के लिए बुरे से बुरे शब्द प्रयोग किये जाते हों और विरोधी लीडरों को गंदी से गंदी गालिया दी जाती हों, जिसमें अपनी जाति के लिए सफेद झूठ बोला जाता हो, जिसमें अपने घर की बुराइयों पर गर्व किया जाता हो, जिसमें अपने गंदे कैरेक्टर की प्रशंसा की जाती हो, जिसमें प्रत्येक घटना को अपनी जाति के लाभ के अनुसार अशुद्ध रूप में

बयान किया जाए, और जिसमें मोटी-मोटी सुरखियों से अपनी ग़लतियों का पक्ष लिया जाये और दूसरों की ख़ूबियों को अस्वीकार किया जाये। मारकेट में एक हिन्दू उस अख़बार को ढूंढेगा जो हिन्दू हो और हिन्दू की बुराइयों को पालने वाला हो और मुसलमान उस परचे को खरीदेगा जो मुसलमान हो और मुसलमानों की बुराइयों की प्रशंसा करने वाला हो।

अतः प्रत्येक वह व्यक्ति जिसमें पत्र-सम्पादन की योग्यता होती है मैदान में आ जाता है और अपनी जाति के जनसाधारण का स्वभाव देखकर एक नैतिक विष की दुकान खोल लेता है और फिर यह विष नगर गांव- गांव मुहल्ले-मुहल्ले बांटता है और नित्य प्रति, निरन्तर उसकी ख़ोराकें प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में उतारी जाती हैं यहां तक कि जातिवाद का नशा ख़ूब भड़क जाता है और दुराचार का रोग भली भांति विकसित हो जाता है और फिर यह पीप किसी स्थान पर साम्प्रदायिक दंगे का रूप धारण करके फूट बहती है तो भारत में इस सिरे से उस सिरे तक हल चल मच जाती है और लोग फ़साद को रोकने के लिए दौड़ते हैं, मौक़े पर लड़ने वाले थोड़े से अपराधी क़ानून की पकड़ में आ जाते हैं और इन अपराधियों के पीछे जो वास्तविक अपराधी छिपे बैठे हैं वे शांतिपूर्वक अपना कार्य समान रूप से जारी रखते हैं। फसल काटने वाला तो पकड़ा जाता है किन्तु बीज बोने वाले पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ती। सारांश यह कि साम्प्रदायिकता अथवा जातिवाद के सिद्धान्तों पर जो लीडरी या पत्र-सम्पादन होता है वह बुराई और फ़साद फैलाने का साधन तो बन सकता है परन्तु उससे नैतिक सदाचार की आशा कभी नहीं की जा सकती।

भौतिकवाद (Materialism)

इस साम्प्रदायिकता अथवा जातिवाद की वृद्धि एवं विकास अकारण नहीं होता अपितु जहां भी वह उभरी है वहां अनिवार्यतः एक ही कारण पाया जाता है और वह यह होता है कि मनुष्य की दृष्टि में नीति का कोई सच्चा प्रतिमान शेष नहीं रहता अपितु उस की जगह केवल भौतिक लाभ जीवन का ध्येय बन जाता है। विदित है कि जब कुछ मनुष्यों का लक्ष्य ही यह हो कि रुपया पैसा, धन दौलत, नौकरी, चाकरी, पद अथवा राज्य मिल जाये तो उनका मेल उन्हीं लोगों से होगा जिनसे उन्हें आशा हो कि वह लाभ पहुंचाने और हानि से बचाने में उनके पक्के साथी हो सकते हैं, और उन लोगों से वे अवश्य कट जायेंगे जिनके बारे में उन्हें संदेह हो कि वे इन की स्वार्थ-सिद्धि में अवश्य बाधक और उनको हानि पहुंचाने वाले होंगे। अतः इस सिद्धान्त पर जिन लोगों का हानि लाभ में साझा होता है वे मिलकर एक टोली बन जाते हैं, और जिन से यह साझा नहीं हो सकता वे शत्रु ठहराये जाते हैं और फिर एक टोली दूसरी टोली को पराजित करने में लग ही जाती है।

यहाँ हिन्दुस्तान में भी चूंकि जनता को जोड़ने और मिलाने वाला कोई आध्यात्मिक सिद्धान्त काम नहीं कर रहा है और न कोई नैतिक अथवा सुधार संबंधी आदर्श सम्मुख है अपितु केवल एक बड़ाई की अभिलाषा, केवल धन सम्पत्ति की वृद्धि की एक धुन, केवल राजसत्ता प्राप्त करने की एक भूख प्रत्येक हृदय तथा प्रत्येक मस्तिष्क में कार्यशील है और इस विषय में केवल हिन्दू हिन्दू ही पर भरोसा कर सकता है और मुसलमान पर उसे भरोसा नहीं हो सकता और मुसलमान मुसलमान ही पर भरोसा कर सकता है हिन्दू पर नहीं कर सकता, अतएव हिन्दुओं का जत्था अलग बन गया है और मुसलमानों का अलग! अब दोनों जत्थों के सिपाही एक एक सिक्के

के लिए, एक-एक रोटी के टुकड़े के लिए, एक-एक नौकरी के लिए एक-एक मंत्रीपद और एक-एक मेम्बरी के लिए खुल्लम-खुल्ला भी और छिपकर भी लड़ते हैं। जल्से और जलूसों द्वारा लड़ते हैं, व्याख्यानों और वक्तव्यों द्वारा लड़ते हैं, पुस्तकों और पत्रों द्वारा लड़ते हैं, चालों और छल कपट द्वारा लड़ते हैं और अवसर पड़ने पर छुरियों और चाकुओं द्वारा भी लड़ते हैं और यह लड़ाई उस समय तक नहीं रुक सकती जब तक यह लोग भौतिक अभिलाषाओं को छोड़ कर किसी उच्च नैतिक आदर्श पर जम न जाएं और या फिर दोनों में से कम से कम एक टोली बिल्कुल ही नष्ट न हो जाए, और ऐसा होना कदापि संभव नहीं है।

विदित है कि सिक्कों और रोटियों, पदों और मंत्रीपद तथा सभापतित्व की लड़ाई में नीति का क्या काम, सच्चाई और न्याय का क्या स्थान, सदगुण एवं सज्जनता का क्या सवाल? यहाँ तो दूसरों की जेब से प्रत्येक रुपया छीन लेना सबसे बड़ी सज्जनता है, दूसरों के मुंह से रोटी का टुकड़ा छीन लेना सब से बड़ा न्याय है, दूसरों का हक़ मार लेना सब से बड़ा सत्य है। ऐसे लोगों की राजनीति में नैतिक सिद्धान्तों का प्रवेश क्यों होगा? यहाँ छुरी और चाकू सब से बड़े नैतिक सिद्धान्त हैं? यहाँ गाली और बदज़बानी ही शिष्टता एवं सदाचार हैं। यहाँ तो धोखा और बेईमानी ही मानवता की सब से बड़ी सेवा है।

इस भौतिक राजनीति का यथार्थ रूप देखना हो तो हिन्दुस्तान में क्या देखते हो, यहाँ तो अभी आरम्भ के पाठ हो रहे हैं। अपने "गुरुदेव" योरुप का हाल देखो जहाँ जाति जाति, दल दल, और व्यक्ति व्यक्ति सब आपस में एक दूसरे के शत्रु हो रहे हैं। चारों ओर कूटनीतिक षड़यंत्र है, चारों और छल कपट है, क्षति पहुंचाने के उपाय हैं, परास्त करने के परामर्श हैं, कानफ्रेंसों में भी, असेम्बलियों

में भी, दफ़्तरों में भी, और घरों में भी, बाज़ारों में भी और रणस्थलों में भी मस्तिष्क से भी और ज़बान से भी, दर्शन--शास्त्र से भी और विज्ञान से भी, ज्ञान से भी कृत्य तथा व्यवहार से भी–। प्रत्येक स्थान पर बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक पूंजीपति और श्रमजीवी, जमींदार और कृषक, स्त्री और पुरुष, शासक पार्टी और अधीन पार्टी, केबीनेट और विरोधी दल संघर्ष में लगे हुए हैं और यह संघर्ष स्टेज और प्रत्येक स्थान पर हो रहा है। क्या यह कोई अच्छाई की स्थिति है? कोई शान्ति का जीवन है? कोई गर्व करने योग्य शुभ कृत्य है? फिर क्या कारण है कि हम भी उसी जीवन-पद्धति को पसंद करें? हम भी हिन्दुस्तान को एक बरतानिया बनाना चाहें या एक अमेरिका इस में निर्मित कर दें, या एक जापान की नींव रखें, या एक रूस की बुनियाद डालें, या जर्मनी और इटली का अनुकरण करें? इन समस्त प्रदेशों ने संसार को दासता, दरिद्रता, खूनी क्रांतियों और विश्वव्यापी युद्धों के सिवा और क्या दिया है कि हम उन की ईर्षा तथा उनके अनुसरण का साहस करें? –किन्तु अंधाधुन्द हम उनके पीछे चल खड़े हुए हैं और भौतिकवाद के मार्ग पर ठीक उन्हीं घटनाओं से हमें भी दोचार होना पड़ रहा है जिनसे यूरुप का क्लेशपूर्ण इतिहास भरा पड़ा है।

राजनीतिक अधिकार तथा आर्थिक प्रधानता को जब आप ने ध्येय बना लिया तो शांति की, संधि की, प्रेम की, सेवा की और भाई-चारे की नींव ही ढादी, फिरतो सत्य और न्याय, त्याग और बलिदान की जड़ कट गई–इस उद्देश्य के साथ इन वस्तुओं की कभी संगति हो नहीं सकती। संसार के सारे इतिहास में भौतिकवाद और नीति का कभी निर्वाह नहीं हुआ। इस उद्देश्य को स्वीकार कर लेने के पश्चात् शांति की स्थापना की कोई संभावना नहीं। "ला ऐण्ड आर्डर" स्थापित हो तो, सुख शांति एवं कल्याण तो नहीं हो

सकता। जब तुम लोगों को मनुष्य से और मानुषिक नीति से रुपया और रोटी अधिक प्रिय है, जब तुम्हें आत्मा एवं मस्तिष्क से पेट और आंतें अधिक प्यारी हैं, जब तुम्हें अखिल संसार के सुख से अपना सुख अधिक प्रिय है, तो फिर तुम क्यों नेकी के स्थान पर कोई चढ़ावा चढ़ाओ, तुम क्यों न्याय के निमित्त अपने कुटुंब अथवा गोत्र को घाटे में रखो, तुम क्यों सत्य के हेतु अपनी जाति को पीछे हटाओ। फिर तो तुम्हारा काम यही होगा कि अपने अधिकार के लिए दूसरी जाति की लाखों जानें भी नष्ट हों तो बेखटके नष्ट होने दो। दूसरों के घरों को फूँकना पड़े तो उन्हें फूंक दो, दूसरों का सतीत्व नष्ट करना पड़े तो नष्ट कर दो।—एक-एक रुपये के लिए यदि छुरियाँ चलानी पड़ें तो चलाओ और एक-एक वोट के लिए यदि रक्त की नदियाँ बहानी पड़ें तो बहाओ और एक-एक मंत्रिमण्डल के लिए यदि संसार को दुःखों से भर देना पड़े तो भर दो—भौतिक युद्ध के उद्देश्य में बड़े से बड़ा महात्मा और बड़े से बड़ा क़ायद, और वेद का बड़े से बड़ा पंडित और क़ुर्आन का बड़े से बड़ा आलिम, और मंदिर का बड़े से बड़ा सेवक और मसजिद का बड़े से बड़ा ख़ादिम, सब के सब चाहे कितने ही रोचक एवं सुदृश्य रूपों में विराजमान हों अपना आचार भ्रष्ट करके उपद्रवी अथवा लड़ाके बने बिना रह ही नहीं सकते। भौतिक लक्ष्यों की राजनीति का प्रत्येक योद्धा अनिवार्यतः मानवता का एक शत्रु बन के रहता है। स्वयं अत्याचार करता है और दूसरों को अत्याचार का पाठ पढ़ाता है, स्वंय उपद्रवी होता है और दूसरों को उपद्रव की शिक्षा देता है , स्वयं दुराचारी होता है और दूसरों को दुराचार सिखाता है—चाहे वह ज्ञान विज्ञान को कितना ही डिगरियाँ ले चुका हो, चाहे वह कितनी ही दूरदर्शिता तथा बुद्धिमानी का प्रदर्शन करता हो, चाहे वह कितनी ही दुआयें अथवा प्रार्थनायें नित्यप्रति ख़ुदा और ईश्वर के द्वार पर बिखेरता हो, चाहे वह

कितनी ही तपस्या या रियाज़त करता हो ,चाहे वह जाति के लिए कितने ही परिश्रम तथा त्याग कर रहा हो। उसने जब मनुष्य को श्रेष्टतम आचार से हटा कर रुपया अथवा धन सम्पत्ति का पुजारी बना दिया और सारी मानव जाति का प्रेम लोगों के दिलों से छीन कर उनमें केवल एक जत्थे या वर्ग का प्रेम भर दिया, और अन्य वर्गों से उन्हें घृणा करना सिखा दिया तो सारे मनुष्यों का वह निःकृष्टतम शत्रु है– क्योंकि उसने दंगों के सैलाब के बंद में छेद करके जन-साधारण को त्रास में लीन कर दिया है।

सीधी बात यह है कि रास्ते दो ही हैं या तो मनुष्य रोटी और रुपये पर भेंट चढ़ेगा और नैतिकता, राजनीति तथा आर्थिक लाभ के लिए जुटाई जायगी या फिर यह कि मनुष्य पर रोटी और रुपया को भेंट चढ़ाया जायेगा और नैतिकता के निमित्त जाति की राजनीतिक और आर्थिक अभिलाषाओं को लुटाया जाएगा–अब यदि इन दोनों वस्तुओं में से हम ने राजनीतिक एवं आर्थिक स्वार्थ ही को प्रिय बनाया है और रोटी और रुपये ही की पूजा का निश्चय किया है तो मनुष्य को इन पर भेंट चढ़ाना पड़ेगा और नैतिकता को इन पर क़ुर्बान करना पड़ेगा–और यह व्यवहार नीति शांति एवं कल्याण की नहीं अपितु कलह एवं विनाश की है और कलह एवं विनाश की अंतिम सीमा प्रलय है इससे पहले और कोई नहीं।

बड़े दुःख की बात है कि अपनी दुनिया बनाने से ऊंचा कोई लक्ष्य आज न हिन्दू जाति के पास है कि वह स्वयं उसे लेकर उठे और मुसलमान को उसकी ओर बुलाये न मुसलमान जाति के पास दुनिया कमाने के सिवा जीवन का कोई पवित्र ध्येय रह गया है कि वह उसे लेकर उठे और हिन्दूओं से उसकी सेवा के लिए अनुरोध करे। दोनों में से किसी के पास कोई ऐसा सत्य, कोई ऐसा सिद्धान्त दिखाई नहीं दे रहा है जिस पर हिन्दू और मुसलमान सहमत हो

सकें। और न इसकी चिंता दोनों में से किसी के नेता कर रहे हैं कि ऐसा कोई श्रेष्ठ, आध्यात्मिक एवं नैतिक लक्ष्य सामने लायें। दोनों के चरित्र के थैले सर्वथा रिक्त हैं, दोनों के कैरेक्टर की तिजोरियाँ खरे माल से वंचित हैं, दोनों की राजनीति की जेब सज्जनता के मोतियों से रहित है, दोनों के निबंधों एवं लेखों के पल्लू सत्य एवं न्याय के उपहार से खाली हो गये हैं—यह अत्यन्त शोचनीय परिस्थिति है।

"निरीश्वरवाद"

यह बात भूलनी न चाहिए कि भौतिकवाद या दुनिया की दासता या रोटी तथा रुपये की पूजा वहां हुआ करती है जहाँ मनुष्य अपने ऊपर कोई सत्ता स्वीकार ही न करे और संसार को स्वामीहीन समझे और अपने आप को बिना नाथ का बैल! —सर्वथा इसी दर्शनशास्त्र का पाठ यूरोप ने हिन्दुस्तानयों को उस हद तक पढ़ाया है कि अब चेले गुरु बन गये हैं। यदि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के बाहच सज्जन स्वरूप से दृष्टि हटा कर उनके व्यावहारिक जीवन को देखा जाये तो पत्यक्ष ज्ञात होता है कि इन लोगों ने समझ रखा है कि यह संसार अधिशासकहीन है और इस में जिस प्रकार चाहें हम ऊधम मचाते फिरें और जिस तरह चाहें दूसरों को दुःख दे देकर सुख भोगते रहें, कोई पूछने वाला नहीं, मर के मिट्टी हो जाना है और जीवन की कोई पूछताछ होने वाली नहीं कि इसकी कुछ चिंता की जाये। ईश्वर के जितने जीवों पर ईश्वरत्व तथा प्रभुत्व जमा सको जमालो, जितने बड़े बन सकते हो बनलो, जितना माल मार सकते हो मार लो, यही सफलता है और यही नफ़ा का सौदा है।

यह है वह अशुद्ध मत जो मनुष्य को भौतिकवाद का पुजारी बनाता है और फिर साम्प्रदायिकता उत्पन्न करता है और फिर उपद्रव छोटे पैमाने पर भी और बड़े पैमाने पर भी संसार में फैलते

रहते हैं।

इस दर्शन शास्त्र को जिस जाति व्यक्ति अथवा वर्ग ने स्वीकार किया उससे संसार को शांति एवं न्याय की आशा न रखनी चाहिए। फिर तो वह खूनी क्रान्तियों, विनाशकारी युद्धों और अन्तर्राष्ट्रीय निष्ठुरताओं के उपहार दे और ले सकता है। हमें दुःख है कि हिन्दुस्तान की दोनों जातियों ने इसी दर्शन-शास्त्र पर अपने व्यवहारों की नींव रखी है, यद्यपि कुछ अपवाद दोनों के भीतर ऐसे भी मिल सकते हैं कि कुछ लोग ईश्वर का नाम भी ले लेते हैं, दीन और धर्म पर बातचीत भी कर लेते हैं, किन्तु राजनीति में और जाति के समस्त जातीय कार्यों में वे ईश्वर को भूले से भी याद नहीं करते वरन् स्वयं अपने प्रभु हैं और हानि लाभ इनका ईश्वर है—साफ़ बात यह है कि ईश्वर की कल्पना मस्तिष्क में प्रस्तुत हो तो हिन्दू मुसलमान पर हाथ उठाते हुए डरे और मुसलमान हिन्दू पर हाथ उठाते हुए भय करे। यह लोग यदि ईश्वर के दास हों और जातीय स्वार्थ के दास न हों तो जब दूसरी जाति पर अत्याचार करने लगें तो उन्हें कुछ तो ख़्याल आये कि ईश्वर ने अत्याचार को ना पसन्द किया है, सदव्यवहार की आज्ञा दी है और दुर्व्यवहार से रोका है।—फिर यदि उनको विश्वास हो कि हम ईश्वर के विवश दास एवं सेवक हैं तो उनको इस चीज़ की भी अनुभूति हो कि ईश्वर का प्रत्येक दास दूसरे के बराबर है और प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, एवं त्याग का पात्र है। प्रत्येक मनुष्य का आदर सम्मान आवश्यक है, प्रत्येक प्राण की प्रतिष्ठा अनिवार्य है, प्रत्येक धन सम्पति की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है, सतीत्व को बचाना हमारा दायित्व है।—और प्रत्येक मुसलमान हिन्दू को, और हिन्दू मुसलमान को अत्याचार से बचाने के लिए यथा शक्ति मैदान में डटा रहे, प्रत्येक व्यक्ति पीड़ित का साथी बन जाये चाहे पीड़ित किसी भी जाति का

व्यक्ति हो, प्रत्येक व्यक्ति अत्याचारी के विरुद्ध खड़ा हो जाये चाहे वह उसका सगा भाई ही क्यों न हो। यह लोग ईश्वर को और ईश्वर के आदेशों को मानने वाले हों तो धन को मनुष्य के चरणों पर निछावर करें और रुपये के लिए कोई मनुष्य भेंट न चढ़ सके। यह नैतिकता पर राजनीतिक एवं आर्थिक स्वार्थों को भेंट चढ़ा दें, किन्तु नैतिकता को क्षति न पहुंचाने दें। –फिर यदि इन लोगों को विश्वास हो कि संसार में जो हम परीक्षात्मक जीवन व्यतीत कर रहे हैं उस का हिसाब कल हमें अपने स्वामी के सम्मुख पूरा-पूरा देना है। प्रत्येक झूठ जो हम लिख बोल रहे हैं और प्रत्येक अनार्जव जो हम लोग कर रहे हैं और प्रत्येक उत्तेजना जिस के कारण हम लोग रहे हैं और हर जान जिसके नष्ट होने के हम ज़िम्मेदार हैं और प्रत्येक सतीत्व जिस की बरबादी में हम सम्मिलित हैं उनमें से एक एक का हिसाब कल खुली अदालत में देना होगा और फिर जो इन करतूतों पर दण्ड मिलेगा तो कोई वकील, झूठा गवाह और कोई सिफ़ारशी इस से न छुड़ा सकेगा, अपितु जिस जाति के लिए हम आज अपराध कर रहे हैं वह स्वयं भी वहां अपराधियों के कटहरे में खड़ी होगी और हमारे ही प्रति हमारे अपराधों पर गवाही दे रही होगी–तो यह लोग कदापि ये अत्याचार न करें जो आज कर रहे हैं। फिर यदि ये लोग ईश्वर का आदेश ढूंढ करके उस पर चलने का निश्चय कर लें तो प्रत्येक अवसर पर बजाय इसके कि अपनी अंधी अभिलाषाओं और अपने आवेगों के पीछे पागलों के समान उठ दौड़ें, तत्क्षण ही ईश्वर के क़ानून से पूछें की हमें क्या करना है और फिर उसके ठोस निर्णय के सम्मुख नत मस्तक हो जायें, चाहे अपनी जाति घाटे में रहे और दूसरों का इसमें लाभ ही क्यों न हो।

फिर कोई लीडर ऐसा न रहे जो सारे मनुष्यों के स्थान पर केवल एक टोली को सेवा करने और दूसरों को सताने के लिए लीडर

बनाया गया हो, जो ऐहिक लाभों के लिए नैतिकता को भंग कर देने को नेता बना दिया गया हो, जो झूठ बोलने में प्रवीण होने के कारण, जो कूटनीति एवं षडयंत्र में कुशल होने के कारण और जो गाली बकने, अपशब्द कहने, डींग मारने और बड़ हाँकने के कारण लीडर बने। जो ईश्वर से विमुख होकर अपने संप्रदाय का प्रभुत्व जमाने और अपना राज्य स्थापित करने के लिए लीडर बने। सांप्रदायों को उत्तेजित कर बार बार लड़ने के लिए लीडर बने, लूट मार तथा हत्याकाण्ड के लिए लीडर बने और लोगों में परस्पर प्रेम उत्पन्न करने के स्थान पर उन्हें एक दूसरे से घृणा करना सिखाने के लिए लीडर बने–फिर यह कि कोई पत्र सम्पादक किसी सम्प्रदाय की बुराइयों को पालने और उस के उत्पात को हवा देने का साहस न करे, घटनाओं को उनकी वास्तविकता से बढ़ा घटा कर वर्णन करने का दुस्साहस न करे, अपने क़लम से उपद्रव के बीज बोकर पेट पालने का अधिकार न पा सके, परन्तु खेद है कि यहाँ ईश्वर की कोई कल्पना शेष न रही–ईश्वरीय आदेश या तो खो चुके हैं या उस तहखानों में छिपाकर पाप की कूट-नीति चलाने खड़े हो गये हैं–ईश्वर के जीवों का कोई सम्मान नहीं–नैतिकता को सवारने की कोई चिन्ता नहीं–जीवन के कृत्यों तथा व्यवहारों की पूछ-ताछ एवं कर्मभोग के सिद्धान्त पर कोई ध्यान नहीं और इसी कारण संसार ईश्वर बना हुआ है और संसार ही संसार के लिए सारी जथे बंदियाँ हो रही हैं।

दंगे की रोकथाम –"ईश-भक्ति"

हम जिन आपदाओं में ग्रस्त होते जा रहे हैं उनसे मुक्त होने के उपाय की ओर संकेत किया जा चुका है अर्थात सब लोग ईश्वर के दास बनकर रहें और उसके आदेशों पर जीवन व्यतीत करने का

निश्चय करें और उसके न्यायालय में उपस्थित होने के विचार से काँप उठें। श्रेष्ठ आचार को फैलाना सबका संयुक्त कार्यक्रम हो, मानवता का सम्मान करना सबका सर्वमान्य नियम हो और उत्पात एवं पापाचार को रोकना और सज्जनता एवं सदाचार फैलाना सबका प्रिय लक्ष्य हो।

साम्प्रदायिक जत्थे तोड़ कर लोग इसी सिद्धान्त पर एकत्र हों कि कौन ईश्वर का आज्ञापालन करता है और अपकार का साथी तथा अपकार का शत्रु है—और उन लोगों को अपने से अलग समझें जो ईशद्रोही औरं नेकी के स्थान पर केवल अपने जातीय स्वार्थ के सेवक और बुराई के बजाय केवल दूसरों के जातीय हित के शत्रु हों। सारी लड़ाई दुष्टता एवं अत्याचार के विरुद्ध लड़ी जाए और साथ दिया जाए तो नेकी तथा न्याय का दिया जाए। अपने सम्प्रदाय की दुष्टता से भी वैसी ही घृणा की जाए जैसी दूसरे सम्प्रदायों की दुष्टता से घृणा हो सकती है और दूसरे सम्प्रदायों की नेकी से भी वैसा ही प्रेम किया जाए जैसा अपने सम्प्रदाय के सदगुणों से हो सकता है। अपने पिता तक के भी हम उसी हद तक सहायक हों जिस हद तक वह नेकी करने वाला हो। जहाँ से वह दुष्टता की सीमा में प्रवेश करे हमारा साथ छूट जाए, और इसी प्रकार अपने घातक शत्रु से भी हमारी वैर उसी समय तक हो जब तक वह बुराई करने पर तुला है, किन्तु ज्यों ही वह नेकी की राह में कदम रखे हम उसके साथ पूरा भाई चारा करलें। हिन्दुओं के दुख में यदि हमें दुख होता हो तो मुसलमानों के आघातों की टीस भी हम अपने हृदय में अनुभव करें और मुसलमानों के सुख से यदि हमें हर्ष होता हो तो हिन्दुओं के आराम में भी हमारा हार्दिक आराम हो—इस पवित्र सिद्धान्त पर हिन्दुस्तान में एक सजीव आन्दोलन चलना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए एक दल ऐसे लोगों का खड़ा होना चाहिए जो संसार पूजा के

'सारे झगड़ों से अलग होकर और विविध जातियों के राजनीतिक एवं आर्थिक झगड़ों को छोड़कर केवल ईशभक्ति, सत्यता, सदाचार तथा मानवता की सेवा को फैलाने और उसे प्रधानता प्राप्त करने के लिए काम करे। वह देश के एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने साथ ले और उसके आचरणों को उत्तमोत्तम नैतिकता से सुसज्जित करके उसे नेकी और सच्चाई का सिपाही बना दे। फिर ऐसे सिपाहियों की एक दृढ़ सेना तैयार हो, जिसके हथियार केवल श्रेष्टतम आचार हों और वह इन अस्त्रों से सशस्त्र होकर जनधन आदर सम्मान, सुख चैन, समय और अपना व्यक्तित्व तथा जाति प्रत्येक वस्तु को सत्य एवं न्याय के लिए बलिदान करते हुए इन शक्तियों के विरुद्ध प्रयत्नशील हो जो ईश्वर, सदाचार एवं सेवा के मार्ग को छोड़कर उपद्रव मचाने में व्यस्त हैं और ऐसे लोगों के हाथों से शासन सूत्र छीन कर ईश-भक्ति, सदाचार तथा सेवा की राह चलने वालों के हाथ में दे दे।

आज तो परिस्थिति यह है कि देशभक्त यह कहते हैं कि भारत पर केवल भारतवासियों को राज्य करने का अधिकार है और मुसलमान कौम परस्त जाति वादी कहते हैं कि मुसलिम क़ौम पर केवल उनके अपने लोगों को राज्य करने का अधिकार है, किन्तु वह नवीन दल जो हमें अभीष्ट है वह इस दावे के साथ खड़ा हो कि ईश्वर के जीवों पर केवल ईश्वर का राज्य होना चाहिए और उसे वह लोग चलाएं जो स्वयं ईशभक्त हों और श्रेष्ठतम आचार से सुसज्जित हों। जिनका मत जाति के भौतिक लाभों के लिए उपद्रव मचाते फिरने के स्थान पर सारे मनुष्यों की नैतिक सेवा हो।

प्रत्येक सदाचारी हिन्दू और प्रत्येक सदाचारी मुसलमान इस ध्येय के लिए एक उच्चकोटि की "अमन कमेटी" में सम्मिलित हो जाए—और जो लोग इस कमेटी का साथ न दे सकें वे चाहे हिन्दू हों

अथवा मुसलमान, अपने-अपने जाति वाद के संघर्ष में लगे रहें और अपनी-अपनी दुनिया के पीछे पड़े रहें। यदि हमारा "सुधारक दल" शुद्ध हृदय, सत्यनिष्ठा तथा श्रेष्टतम आचार के साथ निरन्तर कार्यशील रहेगा तो उन्हें भी अपने पवित्र मत पर ले आयेगा अन्यथा उसके पास इतनी शक्ति होगी और हिन्दू और मुसलमान जन साधारण की इतनी सहानुभूति उसे प्राप्त होगी कि संसार पूजकों को उसके होते हुए फलना फूलना असंभव होगा।

मनुष्यता प्रत्येक अन्य सम्बंधों से अधिक महत्वपूर्ण सम्बन्ध है, नेकी हर दूसरे जोड़ से अधिक दृढ़ जोड़ है, सेवा की बिरादरी प्रत्येक बिरादरी से अधिक पवित्र बिरादरी है, सत्यता प्रत्येक जाति-भक्ति से अधिक त्याग का पात्र है। अतः जोड़ और रिश्ता और बरादरी यही एक है और सब झूठ।

ठीक इसी कार्यक्रम और इसी सिद्धान्त पर भारत में "इस्लामी जमाअत" ने काम आरम्भ किया है और वह हिन्दू मुसलिम झगड़े और जाति-भक्ति साम्प्रदायिकता एवं भौतिकवाद से हट कर केवल ईशभक्ति और ईश्वर के आदेश की प्रधानता, सदाचार के प्रसार और मनुष्यों की सच्ची सेवा करने के लिए सारे लाभ की उपेक्षा करके काम करने लगी है। हम हिन्दुओं और मुसलमानों सब को निमन्त्रण देते हैं कि वे इसके दर्शनशास्त्र और इसके कार्यक्रम पर विचार करें कि आया वास्तव में इसमें शान्ति एवं कल्याण की दृढ़-तम गारन्टी है या नहीं?—फिर जिसका हृदय इस जमाअत पर जमे वह उसका साथ दे और जो अलग इसी सिद्धान्त पर काम करना चाहे वह अलग हो कर काम करे। परन्तु यह बात प्रत्येक अवस्था में निश्चित होनी चाहिए कि हमें ईश्वर को भूल जाने और उसकी प्रसन्नता प्राप्ति की इच्छा से हट जाने वाला जातिभक्त और संसार-पूजक हिन्दुस्तान नहीं चाहिए —अन्यथा किसी उपद्रव

अशांति और हत्या काण्ड पर चीखना और लोगों से नैतिक अनुरोध करना सर्वथा निरर्थक है।

सामयिक और तात्कालिक उपचार

जमाअते इस्लामी का आन्दोलन और उसकी व्यवस्था को समझने समझाने के लिए तो कुछ समय चाहिए और वर्तमान परिस्थितियों की अपेक्षा यह है कि कोई तात्कालिक उपाय भी किया जाए। इस तात्कालिक उपाय के तौर पर हम सार्वजनिक मानव नैतिकता के आधार पर हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों से निम्नलिखित अनुरोध करते हैं:–

हिन्दुओं और मुसलमानों की भलाई चाहने वाले प्रत्येक लीडर से हम निवेदन करते हैं कि वहः–

१– कोई दुर्भावनाजनक वक्तव्य अथवा उत्तेजनाजनक भाषण न दे।

२– अत्याचार में अपनी जाति का पक्ष न ले, पीड़ा में दूसरी जाति से सहानुभूति में कमी न करे।

३– जिन बातों में वह अपनी जाति का साथ दे उन में परजाति का भी साथ दे और जिन बातों में दूसरी जाति की निन्दा करे उनमें अपनी जाति की भी निन्दा करे।

४– जैसी दुर्घटनाओं पर वह अपनी जाति के लिए दुःखी हो वैसी ही दुर्घटनाओं पर दूसरों के लिए भी दुःखी हो और अपनी जाति की जिन-जिन बातों पर प्रसन्न हो दुसरी जाति की उन बातों पर भी प्रसन्नता प्रकट करे।

५– जो अधिकार वह अपनी जाति के लिए चाहता है। सर्वथा वही अधिकार दूसरी जाति के लिए भी चाहे।

६– वह अपनी जाति के उस अंग से अति घृणा एवं अप्रसन्नता की नीति ग्रहण करे जो उपद्रव करे और अशान्ति फैलाये-अपने राजनीतिक दल की ओर से वह ऐसों के विरुद्ध यदि कड़ी कार्यवाही कर सके तो यह उसकी शुद्ध हृदयता का प्रमाण होगा।

७– यदि दंगों के संबंध में स्वयं उसका कोई दोष हो तो मुक्तकण्ठ एवं पूर्ण नैतिक साहस के साथ उसे स्वीकार कर ले और भविष्य में उससे दूर रहने की घोषणा करे।

८– यदि दोष उसे अपने सम्प्रदाय का दिखाई दे, चाहे किसी भी हद तक, तो उस सम्प्रदाय का प्रतिनिधि होने के नाते वह पब्लिक के सम्मुख इसे मान ले और दूसरे सम्प्रदायों से इस संबंध में अपने सम्प्रदाय की ओर से क्षमादान की याचना करे, अपितु क्षति-पूर्ति की भी योजना प्रस्तुत करे।

९– वह अपनी नीति दिखावे के लिए न बदले अपितु अन्तः कारण में दूसरी जाति के प्रति जो दुर्भावनायें हो उन्हें नोच कर वह अलग कर दे।

१०– जितने राजनीतिक मतभेद दोनों जातियों में हों वह संधि-समितियों तथा कमेटियों द्वारा, अन्यथा अधिकाधिक शान्तिमय प्रदर्शनों द्वारा दूर किये जाएं, कोई लीडर लोगों को आपस में लड़ने के लिए न उकसायें।

११–अपनी क़ौम के ऐसे प्रदर्शनों और नारों की निन्दा करे जिससे दूसरों को दुख पहुंचे।

१२– यह नीति दूसरी जाति के लीडरों पर आश्रित न हो वरन् एक नैतिक दायित्व के रूप से उसे निबाहा जाए और दूसरों के लिए आदर्श बनाया जाए।

हिन्दुओं और मुसलमानों की भलाई चाहने वाले प्रत्येक पत्र सम्पादक से हमारा निवेदन है कि वहः–

१– किसी दुर्घटना का समाचार बढ़ा चढ़ाकर या नमक मिर्च मिलाकर प्रकाशित न करे अपितु केवल उतना ही अंश पत्र में वर्णन करे जिसकी सच्चाई का उसे विश्वास हो और जहाँ उसके खंडन में कोई चीज़ मिले या परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव हो तुरन्त ही उसके लिए तैयार हो जाए।

२– समाचार देने में अपनी जाति का पक्षपात और दूसरी जाति का विरोध कार्यशील न हो, न इन दोनों जातियों के कृत्यों तथा व्यवहारों पर आलोचनात्मक मत देते समय किसी एक की ओर झुकाव या पक्षपात दिखाए।

३– दुर्घटनाओं के संबंध में अशुद्ध तालिका देने को अत्यन्त घृणास्पद नैतिक अपराध समझे।

४– दूसरी जाति के जिन पापाचारों की भर्त्सना की जाए, अपनी जाति के भी ऐसे दुष्कर्मों की वैसी ही भर्त्सना की जाए।

५– अपनी जाति को जिस बात पर उकसाया जाए ठीक उसी क़लम से दूसरी जाति को भी उसी बात पर उकसाया जाए और जो अधिकार अपनी जाति के लिए माना जाए दूसरी जाति के लिए भी वही अधिकार स्वीकार किया जाए।

६– अपनी जाति के दुख से जिस प्रकार आपको दुख पहुंचता है दूसरी जाति के दुख से भी उसी प्रकार दुख पहुंचे, और अपनी जाति की जिन अवस्थाओं से आपको हर्ष हो ठीक उन्हीं अवस्थाओं पर दूसरी जाति के लिए भी हर्ष होना चाहिए।

७– कभी भी अपनी जाति की बुराइयों का साथ न दिया जाए

अपितु उन पर न्यायपूर्ण आलोचना की जाए और दूसरी जाति की भलाईयों का कभी खंडन न किया जाए अपितु शुद्ध हृदय से उन्हें स्वीकार किया जाए।

८– जिस आदर से अपनी जाति के लीडरों का उल्लेख किया जाए वैसे ही आदर से और वैसी ही भाषा में दूसरी जाति के लीडरों का उल्लेख किया जाए।

९– उत्तेजना जनक सुर्खियों के साथ समाचार न प्रकाशित करें और भड़काने वाले शब्दों में नोट न लिखे जाएं।

१०– शांति को नष्ट करने वाले जलसों, जलूसों, व्याख्यानों एवं हड़तालों की चर्चा न की जाए और न उनके अग्रसरो को उछाला जाए।

११– यदि कोई पत्र सम्पादक इतना शुद्ध हृदय हो कि वह अपने दोषों को स्वयं अनुभव कर ले कि किस हद तक उसने या उसके सहकारियों ने उत्तेजित करने में भाग लिया है तो वह खुल्लम-खुल्ला अपने दोष को स्वीकार कर ले और भविष्य में अपनी नीति ठीक रखने की घोषणा करे।

१२– यदि किसी पत्र सम्पादक में पूर्ण नैतिक साहस हो तो अपनी जाति के उस अपराध को बताए जो उसने दंगे के संबंध में किये हैं और अपने सारे लीडरों के कामों की बेलाग आलोचना करे और पीड़ित जाति से अपनी जाति की ओर से क्षमा चाहे, अपितु अपनी जाति से कहे कि वह अपने अत्याचार का हरजाना दूसरी जाति को दे।

१३– व्यवहार-नीति में समस्त परिवर्तन केवल दिखावटी न हो अपितु वास्तव में अन्तः कारण की गहराइयों को शुद्ध किया जाए अन्यथा दिखावा एक निष्फल एवं निरर्थक बात है।

१४– यह्न नीति दूसरा जाति के पत्र-सम्पादकों की नीति पर आश्रित न हो अपितु एक नैतिक दायित्व के रूप में और एक मानुषिक कर्त्तव्य समझ कर उसे अंगीकृत किया जाए और दूसरे पत्र-सम्पादकों के लिए उसे आदर्श बनाया जाए।

हम जन-साधारण में से प्रत्येक उस व्यक्ति से जो हिन्दुओं और मुसलमानों की भलाई चाहता हो यह अपील करते हैं कि वह:–

१– हर प्रकार के दंगे में सम्मिलित होने और साथ देने से इंकार कर दे। वह केवल भलाई का साथी हो चाहे वह हिन्दू में पाई जाए या मुसलमान में और बुराई का शत्रु हो चाहे वह उसकी अपनी जाति में हो या दूसरी जाति में।

२– वह ऐसे जलूसों, जलसों और हड़तालों में सम्मिलित न हो जिनका उद्देश्य भड़काना और फ़साद फैलाना हो।

३– वह ऐस व्याख्यान सुनने और ऐसे समाचार-पत्र पढ़ने पर कदापि तैयार न हो जो एक जाति के साथ और दूसरी जाति के शत्रु हों और जिनको सदाचार एवं दुराचार में अन्तर करना न आता हो।

४– वह अपने लीडरों और पत्र-सम्पादकों से मांग करे कि वे उपद्रव के बीज बोने से रुक जाएं।

५– वह दूसरी जाति के लीडरों का उतना ही आदर करे जितना अपनी जाति के लीडरों का करता है चाहे उनसे उसको कितना ही घोर राजनीतिक मतभेद क्यों न हो।

६– वह उस दल का सदस्य न बने जो एक जाति को दूसरी जाति पर किसी प्रकार का अत्याचार करना सिखाये और एक के अधिकारों को मार कर दूसरे के अधिकारों को बढ़ाना चाहे और दोनों जातियों का समान शुभ-चिंतक न हो।

७– वह किसी ऐसी हड़बोंग में न अपना रुपया व्यय करे और

न अपना वोट ही दे जिसका ध्येय केवल एक जाति को दूसरी जाति की अपेक्षा बढ़ाना घटाना और दूसरी जाति को किसी क्षेत्र में कुचलना हो।

८– वह उन सभाओं में न जाए जिनमें एक जाति के प्रति घृणाजनक बातें कही जाएं और दूसरी जाति की अंधी प्रतिष्ठा की जाती हो।

९– वह स्वयं कोई बातचीत एसी न करे जिससे उपद्रव की अग्नि भड़कने में सहायता मिले।

१०– यदि दंगे के संबंध में कोई अपराध स्वयं उससे हो चुका हो तो अपना अपराध माने और दूसरों से क्षमा चाहे अन्यथा कम से कम हृदय में लज्जित हो और भविष्य के लिए अपनी नीति में संशोधन कर ले।

११– वह अपने राजनीतिक मतभेद को स्थिर रखकर उनके निश्चय के लिए शान्तिमय एवं मित्रता पूर्ण व्यवहार-नीति रुचिकर समझे और मतभेद होते हुए भी जनता के जनधन तथा आदरसम्मान का वैसा ही संरक्षक हो जैसे अपने जनधन तथा आदर सम्मान का वह संरक्षक है।

१२– यह नीति दिखावटी न हो अपितु अपने अंतः करण को भी दुर्भावनाओं से शुद्ध किया जाए क्योंकि दिखावा निष्फल एवं निरर्थक वस्तु है।

१३– इस नीति का अवलंबन दूसरी जाति के व्यक्तियों की नीति से आबद्ध न हो अपितु उसे एक नैतिक कर्त्तव्य और मानुषिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया जाए और एक उत्तम आदर्श दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए।

* * *

हमारी हिन्दी पुस्तकें

अनूदित कुरआन मजीद	मौलाना मौदूदी अनुवाद—मु० फ़ारूक खां
आख़िरी नबी	
और आत्मा जाग उठी	
औरत और इस्लाम	मौलाना जलालुद्दीन अन्सर
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना मौदूदी
इन्सान अपने आप को पहचान	वहीदुद्दीन खां
इस्लाम आप से क्या चाहता है?	मौलाना सैयद हामिद अली
इस्लाम और अज्ञान	मौलाना मौदूदी
इस्लाम और बर्थ-कंट्रोल	मौलाना मौदूदी
इस्लाम और सन्यास	मौलाना मौदूदी
इस्लाम एक प्रेरणा	मु० फ़ारूक खां
इस्लाम एक मधुर उपहार	मु० फ़ारूक खां
इस्लाम एक परिचय	
इस्लाम एक सिद्धान्त एक आन्दोलन	मरयम जमीला
इस्लाम की जीवन-व्यवस्था	मौलाना मौदूदी
इस्लाम की शीतल छाया	सैयद हामिद अली
इस्लाम जिससे मुझे प्यार है	मिस्टर अडियार
इस्लाम दर्शन	डा. गणेशदत्त सारस्वत पी.एच.डी. मौलाना मौदूदी
इस्लाम भविष्य की आशा	सैयद कुतुब

पुस्तक सूचि मुफ़्त मंगायें।